स्मृति-शेष

पॉल स्वीज़ी:

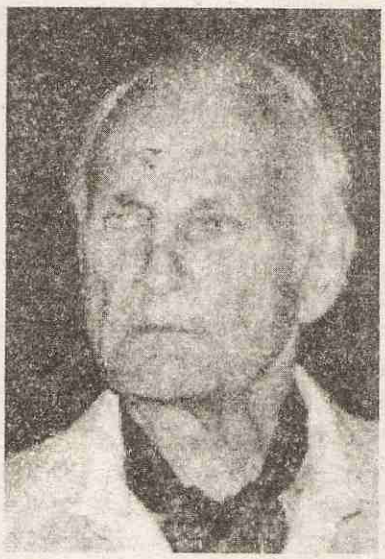

एक प्रतिबद्ध बुद्धिजीवी

वर्ष 2004 इस मायने में एक अपूरणीय क्षति का वर्ष रहा कि इसने हमसे कई एक ऐसे प्रतिबद्ध बुद्धिजीवियों को छीन लिया जो जीवनपर्यन्त अपने उसूलों पर अडिग रहे और पूँजीवादी अनाचार और लूटपाट के विरुद्ध आवाज़ बुलन्द करते रहे। अमेरिकी वामपंथी पत्रिका *'मंथली रिव्यू'* के संस्थापक सम्पादक **पॉल एम. स्वीज़ी** एक ऐसे ही कलम के सिपाही थे जिनका गत 27 फरवरी 2004 को न्यूयॉक में निधन हो गया।

पॉल स्वीज़ी ने कार्ल मार्क्स के राजनीतिक-आर्थिक सिद्धांतों को व्याख्या करते हुए इज़ारेदार पूंजीवाद के विविध लक्षणों को समझने में उनका प्रभावी इस्तेमाल किया । *'पूँजीवादी विकास का सिद्धांत'* *'इजारेदार पूँजीवाद: अमेरिकी आर्थिक और सामाजिक व्यवस्था पर एक निबन्ध'* (**पॉल बरान** के साथ) तथा *'ठहराव और वित्तीय विस्फोट'*(**हैरी मैग्दॉफ** के साथ) जैसी उनकी प्रसिद्ध पुस्तकों ने पूंजीवाद की गतिकी और विभिन्न परिघटनाओं-अभिलाक्षणिकता को स्पष्ट करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

सामन्तवाद से पूंजीवाद में संक्रमण के प्रश्न पर चली प्रसिद्ध सैद्धांतिक बहस में पॉल स्वीज़ी ने **मॉरिस डॉब, रोडनी हिल्टन, रॉबर्ट ब्रेनर** और **पेरी एण्डर्सन** आदि के साथ हिस्सा लिया। इस बहस में यद्यपि उनकी प्रस्थापनाएँ अधिक विवादास्पद मानी गयीं तथा मॉरिस डॉब, हिल्टन, ब्रेनर आदि के विचार क्लासिकी मार्क्सवादी अवधारणा के अधिक अनुरूप थे, लेकिन फिर भी संक्रमण की परिघटना को समझने में इस बहस में स्वीज़ी की भागीदारी का महत्वपूर्ण योगदान था। इसी तरह, समाजवादी संक्रमण की प्रकृति और समस्याओं को समझने में पॉल स्वीज़ी और **चार्ल्स बेतलहीम** के बीच चली बहस से दुनिया भर के मार्क्सवादियों को विशेष मदद मिली। हालाँकि इस बहस में भी स्वीज़ी के निष्कर्षों से सहमति कठिन है, लेकिन समाजवादी संक्रमण की समस्याओं की समझदारी बनाने में उनके महत्वपूर्ण योगदान को अस्वीकार नहीं किया जा सकता और अपनी विसंगतियों के बावजूद, काफ़ी हद तक उन्होंने बेतलहीम की अवस्थिति की कमज़ोरियों को भी उजागर किया। पॉल स्वीज़ी समाजवादी समाज के अन्तरविरोधों की पड़ताल करते हुए स्तालिन की मृत्यु के बाद के सोवियत समाज में आयी विकृतियों को स्वीकार करते हुए भी यह नहीं मानते थे कि वहाँ ख्रुश्चेव के समय ही पूँजीवाद की पुनर्स्थापना हो चुकी थी। वे उसे विभिन्न विकृतियों से ग्रस्त, समाजवाद और पूँजीवाद से भिन्न एक संक्रमण कालीन सामाजिक व्यवस्था मानते थे। स्वीज़ी चीनी क्रान्ति और माओ के समाजवादी प्रयोगों का ऊँचा मूल्यांकन करते थे, लेकिन वे पूँजीवादी पुनर्स्थापना के बारे में माओ और चीनी पार्टी के विचारों से पूरी तरह सहमत नहीं थे। पॉल स्वीज़ी सामाजिक प्रयोगों में सक्रिय पार्टी कार्यकर्ता नहीं थे (और यह उनकी कुछ विवादास्पद प्रस्थापनाओं और विभ्रमों का एक अहम कारण था), लेकिन किसी भी तरह से उन्हें नववामपंथी ''मुक्त चिन्तकों'' और संशोधनवादी बुद्धिजीवियों की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता। वे एक प्रतिबद्ध मार्क्सवादी बुद्धिजीवी थे, जो आखिरी साँस तक साम्राज्यवादी लूट और युद्धों का उक्रट विरोधी रहा और मुक्ति की समाजवादी परियोजनाओं के प्रति जीवनपर्यन्त निष्ठावान बना रहा।

पॉल स्वीज़ी उस पीढ़ी के मार्क्सवादी थे जिसने 1930 के दशक की महामन्दी और द्वितीय महायुद्ध की विभीषिका को देखा-भोगा था और पूँजीवाद के मानवद्रोही चरित्र को भलीभाँति समझा था। विश्वयुद्ध में सोवियत संघ की विजय, समाजवाद की प्रगति और राष्ट्रीय मुक्ति युद्धों ने मेहनतकश जनता के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को अडिग बनाया था। अमेरिका में मैकार्थीकालीन दमन के दौर में भी वे अपने उसूलों पर निर्भीकता और मुखरता के साथ डटे रहे। क्षुद्र, फैशनपरस्त बौद्धिकता से वे घृणा करते थे। न केवल अमेरिका बल्कि पूरी दुनिया के अकादमिक जगत में और बौद्धिक समाज में मार्क्सवादीयों की पीढ़ियाँ तैयार करने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है और वर्ग संघर्ष में सक्रिय सर्वहारा के हरावल दस्ते भी उनके विचारों का संजीदगी से अध्ययन करते और लाभ उठाते रहे हैं।

1949 में अमेरिका में घनघोर प्रतिक्रिया के दौर में उन्होंने लियो ह्यूबरमैन के साथ मिलकर समाजवाद के प्रति प्रतिबद्ध विचार-विमर्श के मंच के रूप में 'मंथली रिव्यू' पत्रिका की शुरुआत की थी। **लियो ह्यूबरमैन** की मृत्यु के बाद **हैरी मैग्दॉफ** इस पत्रिका के सम्पादन से जुड़े। आज भी हैरी मैग्दॉफ और **जॉन बेलेमी फॉस्टर** के सम्पादन में इसका प्रकाशन जारी है। *'मंथली रिव्यू'* के प्रवेशांक में ही अल्बर्ट आइंस्टीन का सुप्रसिद्ध निबन्ध 'समाजवाद ही क्यों?' पहली बार प्रकाशित हुआ था।

पॉल स्वीज़ी के साहस, प्रतिबद्धता और वैचारिक कार्यों का हम कृतज्ञतापूर्वक अभिनन्दन करते हैं और उन्हें हार्दिक श्रद्धांजलि देते हैं।